

This question paper contains 2 printed pages.

Roll No. :
Unique Paper Code : **12137902**
Name of the Paper : **Art of Balanced Living**
Name of the Course : **B.A. (H), Sanskrit, DSE, LOCF**
Semester : **V**
Duration : **3 Hours**
Maximum Marks : **75**

टिप्पणी:

1. इस प्रश्न-पत्र का उत्तर संस्कृत या हिन्दी या अंग्रेजी किसी एक भाषा में दीजिए, परन्तु सभी उत्तरों का माध्यम एक ही होना चाहिए।
2. इस प्रश्नपत्र में कुल 6 प्रश्न हैं। इनमें से किन्हीं 4 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सबके अङ्क समान हैं।

Note:

1. Answers should be written in **Sanskrit** or in **Hindi** or in **English** but the same medium should be used throughout the paper.
2. There are **total 6 questions** in this question paper. **Attempt any 4 questions.** Each question contains equal marks.
1. बृहदारण्यकोपनिषद् के आधार पर याज्ञवल्क्य के इस कथन – 'न वा अरे जायायै कामाय जाया प्रिया भवति' को स्पष्ट कीजिए।
Explain this statement of Yagyavalkya - '*na vā are jāyāyai kāmāya jāyā priyā bhavati*' on the basis of Bṛhadāraṇyakopaniṣad.
2. 'ब्रह्मज्ञान से ही मुक्ति सम्भव है' कथन के आधार पर अद्वैतमत में ब्रह्मज्ञान के साधनों का वर्णन कीजिए।
'Liberation is possible only from knowledge of Brahma' on the basis of the statement, describe the means of knowledge of Brahma in Advaita opinion.
3. पातञ्जलयोगदर्शन के अनुसार 'योगः समाधिः स च सार्वभौम चित्तस्य धर्मः' का अर्थ बताते हुए अष्टांग-योग का वर्णन कीजिए।
According to the Yoga philosophy of Patanjali, explaining the meaning of '*yogah samādhīh sa ca sārva-bhaum cittasya dharmah*', describe eight aids to Yoga.

4. चित्तवृत्तिनिरोध के उपायों का विवेचन करते हुए आधुनिक सन्दर्भ में योग की प्रासंगिकता को सिद्ध कीजिए।
Prove the relevance of the Yoga in the modern context by discussing the measures to control cittavṛtti.
5. गीता के आधार पर सन्तुलित जीवन के लिए 'ज्ञानयोग' की उपयोगिता का वर्णन कीजिए।
Describe the usefulness of 'Jñāna-yoga' for a balanced life on the basis of Gita.
6. 'सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः' पंक्ति के आधार पर गीता में कर्म-योग के महत्त्व पर प्रकाश डालिये।
'Sahayajñāh prajāh sṛṣṭavā purovāca prajāpatiḥ' on the basis of this statement of the Gita, explain the significance of karma-yoga (Yoga of action).

munotes.in